❋ 9 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] मीठे बच्चे– रावण का कायदा है आसुरी मत, झूठ बोलना, बाप का कायदा है श्रीमत, सच बोलना।

2] कैसा यह बेहद का वन्डरफुल नाटक है, जो फीचर्स, जो एक्ट सेकण्ड बाई सेकण्ड पास हुआ वह फिर हूबहू रिपीट होगा। कितना वन्डर है, जो एक का फीचर न मिले दूसरे से। कैसे बेहद का बाप आकर के सारे विश्व की सद्गति करते हैं, पढ़ाते हैं, यह भी वन्डर है।

3] सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं और यह समझाने वाला एक ही बाप है और तो जो भी आत्मायें अथवा सालिग्राम हैं सबके शरीर का नाम है। बाकी एक ही परम आत्मा है, जिसको शरीर नहीं है। उस परम आत्मा नाम है शिव। उनको ही पतित-पावन परमात्मा कहा जाता है। वही तुम बच्चों को इस सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त का राज समझा रहे हैं। पार्ट बजाने के लिए तो सब यहाँ आते हैं। यह भी समझाया है विष्णु के दो रूप हैं। शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। यह सब बाप बैठ समझाते हैं। बाप कब आते हैं? जबकि नई सृष्टि की स्थापना होती है और पुरानी का विनाश होता है। बच्चे जानते हैं नई दुनिया में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। वह तो सिवाए परमपिता परमात्मा के और कोई कर ही नहीं सकते। वही एक परम आत्मा है जिसको परमात्मा कहा जाता है। उनका नाम है शिव। उनके शरीर का नाम नहीं पड़ता है। और जो भी हैं सबके शरीर का नाम पड़ता है।

4] तुम जानते हो हम सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियां हैं शिवबाबा के बच्चे, सब भाई-भाई हैं। असुल में भाई-भाई हैं फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बनने से भाई-बहन बनते हैं। फिर देवता कुल में जायेंगे तो सम्बन्ध की वृद्धि होती जायेगी। इस समय ब्रह्मा के बच्चे और बच्चियां हैं तो एक ही कुल हुआ, इनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। राजाई न कौरवों की हैं, न पाण्डवों की। डिनायस्टी तब होती है जब राजा-रानी नम्बरवार गद्दी पर बैठते हैं। अभी तो है प्रजा का प्रजा पर राज्य। शुरू से लेकर पवित्र डिनायस्टी और अपवित्र डिनायस्टी चली आई है। पवित्र डिनायस्टी देवताओं की ही चली है। बच्चे जानते हैं 5 हजार वर्ष पहले हेविन था तो पवित्र डिनायस्टी थी। उन्हों के चित्र भी है, मन्दिर कितने आलीशान बने हुए हैं। और कोई के मन्दिर नहीं है। इन देवताओं के ही बहुत मन्दिर हैं।

5] तुम जानते हो बरोबर अब नई दुनिया की स्थापना हो रही है और पुरानी दुनिया का विनाश होता है। यह भी समझाया है पतित-पावन एक ही निराकार बाप है। कोई देहधारी पतित-पावन हो न सके। पतित-पावन परमात्मा ही है।

6] परन्तु बच्चों को वन्डर लगना चाहिए जो फीचर्स, जो एक्ट सेकण्ड बाई सेकण्ड पास्ट हुई वह फिर हूबहू 5000 वर्ष के बाद रिपीट होनी है। कितना वन्डरफुल यह नाटक है, और कोई समझा नहीं सकते। तुम जानते हो हम सब पुरूषार्थ करते हैं। नम्बरवार तो बनेंगे ही। सब तो कृष्ण नहीं बनेंगे। फीचर्स सबके डिफरेन्ट होंगे। कितना बड़ा वन्डरफुल नाटक है। एक का फीचर न मिले दूसरे से। वही हूबहू खेल रिपीट होता है। यह सब विचार कर आश्चर्य खाना होता है।

7] जो बहुत कीमती मूल्यवान बेदाग डायमण्ड होता है उसे लाइट के आगे रखो तो भिन्न-भिन्न रंग दिखाई देते हैं। ऐसे जब आप फरिश्ता रूप बनेंगे तो आप द्वारा चलते-चलते अष्ट शक्तियों के किरणों की अनुभूति होगी। कोई को आपसे सहनशक्ति की फीलिंग आयेगी, कोई को निर्णय करने के शक्ति की फीलिंग आयेगी, कोई से क्या, कोई से क्या शक्तियों की फीलिंग आयेगी।

8] प्रत्यक्ष प्रमाण वह है जिसका हर कर्म सर्व को प्रेरणा देने वाला है।

✺ 9 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ योग-

1] – – –

✺ धारणा-

1] बच्चे समझते हैं पढ़कर हमको होशियार होना है और दैवीगुण भी धारण करने है। आसुरी गुण पलटने हैं। दैवी गुणों और आसुरी गुणों का वर्णन चार्ट में दिखाना होता है। अपने को देखना है हम किसको तंग तो नहीं करते हैं? झूठ तो नहीं बोलते हैं? श्रीमत के खिलाफ तो नहीं चलते हैं ?

2] हर बात बाप समझाते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, अच्छी रीति धारण करो। मुख्य बात है बाप की याद। यह याद की ही दौड़ी है। रेस होती है ना।

3] तो बच्चों को सृष्टि का चक्र भी समझाते रहते हैं और दैवी चलन भी चाहिए। एक तो किसको दु:ख नहीं देना है। ऐसे नहीं, कोई को विष चाहिए, वह नहीं देते हो तो यह कोई दु:ख देना है। ऐसे तो बाप कहते नहीं हैं। कई ऐसे भी बुद्धू निकलते हैं जो कहते हैं बाबा कहते हैं ना– किसको दु:ख नहीं देना है।। अब यह विष मांगते नहीं हैं तो उनको देना चाहिए, नहीं तो यह भी किसको दु:ख देना हुआ ना। ऐसे समझने वाले मूढ़मती भी हैं। बाप तो कहते हैं **''पवित्र जरूर बनना है''** । आसुरी चलन और दैवी चलन की भी समझ चाहिए।

4] बच्चों को यही शिक्षा मिलती है– दैवीगुण धारण करो। छी-छी वस्तु ऐसी कोई के हाथ की बनाई हुई नहीं खानी चाहिए।

✺ सेवा-

1] नई दुनिया की स्थापना ब्रह्माकुमार, कुमारियों द्वारा होना है। यह भी पक्का निश्चय है इसलिए सर्विस पर लगे हुए हैं। कोई न कोई का कल्याण करने की मेहनत करते रहते हैं।